दिल्ली उच्च न्यायालय : नई दिल्ली

रि.या.(सि.) सं. 2291/2012

निर्णय की तिथि: 1 अक्टूबर, 2013

संजय कुमार

.....याचिकाकर्ता

द्वारा : सुश्री अवनी सिंह, अधिवक्ता

बनाम

भारत संघ व अन्य

.....प्रत्यर्थागण

द्वारा : श्री आशीष निश्चल, अधिवक्ता

कोरम:

माननीय सुश्री न्यायमूर्ति गीता मित्तल

माननीय सुश्री न्यायमूर्ति दीपा शर्मा

गीता मित्तल, न्या., (मौखिक)

1. वर्तमान रिट याचिका के माध्यम से याचिकाकर्ता ने केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल में कांस्टेबल/ड्राइवर के रूप में उसकी सेवा समाप्त करने के दिनांक 2 जून, 2011 के आदेश एवं याचिकाकर्ता की पुनरीक्षण याचिका को खारिज करने के प्रत्यर्था सं. 4 द्वारा पारित दिनांक 18 अगस्त, 2011 के आदेश को चुनौती दी गयी है।

2. वर्तमान रिट याचिका में प्रस्तुत तथ्य एक संकीर्ण दिशा में हैं तथा काफी हद तक निर्विवाद हैं। याचिकाकर्ता को दिनांक 17 नवंबर, 2008 को ड्राइविंग लाइसेंस जिसकी सं. 83920/एमटीएच थी जो जिला परिवहन कार्यालय, थौबल, मणिपुर द्वारा जारी किया गया था जोकि दिनांक 17 नवंबर, 2008 से दिनांक 16 नवंबर, 2011 तक की अवधि तक वैध था।

3. ऐसा प्रतीत होता है कि याचिकाकर्ता ने इसके बाद हरियाणा परिवहन प्राधिकरण से लाइसेंस के लिए आवेदन किया क्योंकि वह 30 जून, 2009 से हरियाणा राज्य में रह रहा था। याचिकाकर्ता को हरियाणा परिवहन प्राधिकरण द्वारा एक नया ड्राइविंग लाइसेंस जारी किया गया था, जिसकी संख्या 1591/सी-2/09 थी एवं इसकी वैधता अवधि दिनांक 10 नवंबर, 2011 तक थी। यह भी ध्यान में रखने की आवश्यकता है कि यह नया ड्राइविंग लाइसेंस जिला परिवहन कार्यालय, थौबल, मणिपुर द्वारा जारी किए गए ड्राइविंग लाइसेंस संख्या 83920/एमटीएच के आधार पर जारी किया गया था।

4. याचिकाकर्ता ने प्रतिविरोध किया है कि हरियाणा परिवहन प्राधिकरण ने याचिकाकर्ता को नया लाइसेंस जारी करने से पहले थौबल, मणिपुर में जारी किए गए ड्राइविंग लाइसेंस की उचित जांच की थी तथा उसकी वैधता सुनिश्चित की थी। याचिकाकर्ता द्वारा प्रस्तुत इस अभिवचन का समर्थन जिला परिवहन अधिकारी, नूह, मेवात, हरियाणा/प्रत्यर्थी सं. 5 द्वारा हमारे

समक्ष प्रस्तुत प्रति शपथपत्र में किये गये अभिवचन से होता है, जिसमें यह प्रस्तुत किया गया है कि जिला परिवहन अधिकारी, थौबल, मणिपुर द्वारा याचिकाकर्ता के पक्ष में जारी किए गए ड्राइविंग लाइसेंस को जिला परिवहन अधिकारी, नूह, मेवात, हरियाणा द्वारा सभी औपचारिकताएं पूरी करने के बाद दिनांक 30 जून, 2009 को नवीनीकृत किया गया था।

5. ऐसा प्रतीत होता है कि केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल में कांस्टेबल/ड्राइवर के पद के लिए रिक्तियों को भरने के संबंध में वर्ष 2009 में जारी विज्ञापन के अनुसार, याचिकाकर्ता ने उक्त पद पर नियुक्ति हेतु आवेदन किया था। आवश्यकतानुसार, उन्होंने अपने ड्राइविंग लाइसेंस से संबंधित सभी आवश्यक दस्तावेज प्रस्तुत किए थे। याचिकाकर्ता की विद्वान अधिवक्ता सुश्री अवनी सिंह ने प्रस्तुत किया कि उन्होंने ड्राइविंग लाइसेंस सं. 83920/एमटीएच का विधिवत विवरण दिया था।

6. एक कठोर चयन प्रक्रिया तथा नियुक्ति से संबंधित सभी पात्रता आवश्यकताओं को पूरा करने के पश्चात्, याचिकाकर्ता को कांस्टेबल (ड्राइवर) के पद पर नियुक्ति का आदेश जारी किया गया था। याचिकाकर्ता 25 जुलाई, 2009 को समूह केंद्र, के.रि.पु बल, गांधीनगर, गुजरात में ड्यूटी में शामिल हुआ, जहाँ से उसे सामान्य प्रशिक्षण हेतु भर्ती प्रशिक्षण केंद्र, अवाडी भेजा गया। याचिकाकर्ता प्रस्तुत करता है कि वह शारीरिक और चिकित्सकीय रूप से

स्वस्थ पाया गया था एवं चयन के समय के साथ-साथ अवाडी में सामान्य प्रशिक्षण के दौरान किए गए भारी वाहन ड्राइविंग परीक्षण में भी संतोषजनक रूप से भाग लिया था। निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार, प्रत्यर्थी सं. 1 व 3 चयनित उम्मीदवारों के दस्तावेजों के सत्यापन के मामले को आगे बढ़ाया।

7. प्रत्यर्थीगण ने दिनांक 4 अगस्त, 2009; 15 अक्टूबर, 2009 तथा 6 जनवरी, 2010 के तीन पत्रों पर भरोसा किया है, जिन्हें जिला परिवहन अधिकारी, थौबल, मणिपुर को भेजा गया था, जिसमें ड्राइविंग लाइसेंस सं. 83920/एमटीएच के सत्यापन की मांग की गई थी जो मणिपुर में याचिकाकर्ता को जारी किया गया था।

8. इसके उत्तर में, प्रत्यर्थीगण को दिनांक 18 जनवरी, 2010 का एक पत्र मिला, जिसमें प्रत्यर्थी सं. 4 मणिपुर से लिखत में, डीआईजीपी, जीसी, गांधीनगर, गुजरात को सूचित किया कि याचिकाकर्ता को दिनांक 17 नवंबर, 2008 को ड्राइविंग लाइसेंस जारी किया गया था जो दिनांक 16 नवंबर, 2011 तक वैध था। हालांकि, इस तरह के ड्राइविंग लाइसेंस की संख्या गलत तरीके से "83902/एमटीएच" के रूप में उल्लिखित की गई थी।

इस त्रुटि को दिनांक 28 फरवरी, 2010; 21 अप्रैल, 2010 के साथ-साथ 7 अक्टूबर, 2011 के पत्रों में दोहराया गया था।

9. ऐसा प्रतीत होता है कि प्रत्यर्थी सं. 1 से 3 ने प्रत्यर्थी सं. 4 से याचिकाकर्ता के ड्राइविंग लाइसेंस के बारे में स्पष्टीकरण मांगा था। प्रत्यर्थी के दिनांक 12 फरवरी, 2011 के पत्र के उत्तर में, प्रत्यर्थी सं. 4 ने जिला परिवहन अधिकारी, थौबल, मणिपुर के कार्यालय से रिकॉर्ड से सत्यापन के बाद दिनांक 28 फरवरी, 2011 को एक पत्र जारी किया, जो इस प्रकार है:-

- "उपर्युक्त विषय पर आपके पत्र सं. V-I-I/2011 दिनांक 12 फरवरी 2011 के संदर्भ में, मैं आपको सूचित करना चाहता हूँ कि ड्राइविंग लाइसेंस सं. 83902/एमटीएच संजय कुमार पुत्र बानी सिंह, वीपीओ खुसपुतेह तथा जिला रेवाड़ी, हरियाणा के नाम पर है एवं ड्राइविंग लाइसेंस सं. 83920/एमटीएच एस.एन. मंडल पुत्र बी.एन. मंडल, गांव तथा पोस्ट ऑफिस रेबारी, जिला धुबरी, असम के नाम पर है। विवरण नीचे दिया गया है

क्र.सं.	नाम व पता	जारी करने की तिथि	समाप्ति की तिथि	वर्ग
1. डीएल सं. 83902/एमटी एच	संजय कुमार पुत्र बानी सिंह विपीओ खुसपुरा, तेह एवं जिला रेवाड़ी हरियाणा	17-11-08	16-11-2011	भारी वाहन
2. डीएल सं. 83902/एमटी एच	एस.एन. मंडल पुत्र बी.एन. मंडल वीपीओ झपुराबारी जिला धुबरी,	17-11-08	16-11-2011	भारी वाहन

असम

यह इस कार्यालय द्वारा रखे गए रिकॉर्ड के अनुसार है।”

(जोर दिया गया)

10. हमने पाया कि जो प्रति शपथपत्र दाखिल किया गया है, उसमें प्रत्यर्थागण ने प्रत्यर्था सं. 4 से पहले के पत्र की प्राप्ति को स्वीकार किया है, जिसमें ऊपर बताई गई स्थिति को दर्शाया गया है। पैरा 6 में कहा गया है कि दिनांक 29 दिसंबर, 2010 के पत्र द्वारा, जिला परिवहन अधिकारी, थौबल, मणिपुर ने उन्हें सूचित किया था कि याचिकाकर्ता को जारी किया गया ड्राइविंग लाइसेंस सं. 83920 सही था तथा लिपिकीय त्रुटि के कारण अंतर उत्पन्न हो सकता है।

11. जिला परिवहन अधिकारी, थौबल, मणिपुर से प्राप्त गलत संसूचना को ध्यान में रखते हुये, याचिकाकर्ता के पास ड्राइविंग लाइसेंस संख्या 83902/एमटीएच है, प्रत्यर्थागण ने याचिकाकर्ता को दिनांक 2 मई, 2011 को एक नोटिस जारी किया, जिसमें केंद्रीय सिविल सेवा (अस्थायी सेवा) नियम, 1965 के नियम 5(1) के तहत अधिकारिता का प्रयोग करने का दावा किया गया, जिसमें उसे सूचित किया गया कि उसकी सेवाएं उस तिथि से एक महीने

की अवधि की समाप्ति की तिथि तक समाप्त हो जाएंगी, जिस दिन उसे नोटिस तामिल हुआ था।

12. इस कठिन परिस्थिति का सामना करते हुए, याचिकाकर्ता व्यक्तिगत रूप से प्रत्यर्थी सं. 4 के कार्यालय में गया, जिसके बाद प्रत्यर्थी सं. 4 द्वारा प्रत्यर्थी सं. 3 को दिनांक 12 मई, 2011 को एक पत्र जारी किया गया, जिसमें याचिकाकर्ता को जारी किए गए लाइसेंस की वैधता एवं सत्यता की पुष्टि की गई तथा साथ ही इस तथ्य की भी पुष्टि की गई कि उस पर 83920/एमटीएच लिखा हुआ है। प्रत्यर्थी सं. 4 ने स्पष्ट रूप से कहा कि उनके कार्यालय द्वारा दिनांक 7 अक्टूबर, 2010 को भेजे गए पत्र द्वारा दिया गया उत्तर त्रुटिपूर्ण और गलत था।

13. याचिकाकर्ता ने प्रस्तुत किया है कि उसने यह संसूचना प्रत्यर्थीगण के समक्ष रखी थी। लेकिन इस पर कोई ध्यान नहीं दिया गया। इसके बजाय दिनांक 2 जून, 2011 को एक आदेश पारित कर बिना किसी और जांच के उनकी सेवाएं समाप्त कर दी गईं।

14. यह उल्लेखनीय है कि दिनांक 12 मई, 2011 का पत्र श्री साइमन कीशिंग द्वारा लिखित एवं हस्ताक्षरित था, यह वही अधिकारी है जिसने दिनांक 18 जनवरी, 2010 तथा 7 अक्टूबर, 2010 के पत्र जारी किए थे। दिलचस्प बात यह है कि याचिकाकर्ता के ड्राइविंग लाइसेंस सं.

83920/एमटीएच पर उसी अधिकारी द्वारा हस्ताक्षरित एवं जारी किया गया है।

15. याचिकाकर्ता ने दिनांक 17 जून, 2011 को पुनरीक्षण याचिका के माध्यम से दिनांक 2 जून, 2011 के समाप्ति आदेश को चुनौती दी। हालांकि, इसे दिनांक 18 अगस्त, 2011 को पारित एक आदेश द्वारा अनौपचारिक रूप से अस्वीकार कर दिया गया था। अस्वीकृति में प्रत्यर्थी सं. 3 द्वारा प्राप्त दिनांक 29 दिसंबर, 2010 के संचार के साथ-साथ याचिकाकर्ता द्वारा प्रत्यर्थी अधिकारियों के समक्ष रिकॉर्ड पर रखे गए दिनांक 12 मई, 2011 के पत्र को नजरअंदाज कर दिया गया था।

16. याचिकाकर्ता ने वर्तमान याचिका के माध्यम से दिनांक 2 जून, 2011 के समाप्ति आदेश के साथ-साथ दिनांक 18 अगस्त, 2011 के पुनरीक्षण आदेश को भी चुनौती दी गयी है। जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, याचिकाकर्ता ने आक्षेपित आदेश पारित करने वाले अधिकारियों के अलावा जिला परिवहन अधिकारी, थौबल, मणिपुर को प्रत्यर्थी सं. 4 के रूप में शामिल किया है।

17. रिट याचिका के विरोध में दायर प्रति शपथपत्र में प्रकट किया गया है कि प्रत्यर्थीगण ने डीआईजी के आदेश के तहत लाइसेंसों का सत्यापन शुरू किया है। प्रत्यर्थी सं. 1 से 3 द्वारा सूचित किया गया है कि उनके परिवहन

विभाग द्वारा पुनः सत्यापन का अनुरोध किया गया था, जिसके आधार पर जिला परिवहन अधिकारी, थौबल, मणिपुर के साथ आगे संचार का आदान-प्रदान किया गया था। प्रत्यर्थी सं. 3 द्वारा भेजे गए संसूचना एवं प्रत्यर्थी सं. 4 से दिनांक 25 अप्रैल, 2012 की प्रतिक्रिया की फोटोकॉपी प्रस्तुत की गई है एवं उन्हें रिकॉर्ड में ले लिया गया है।

18. दिनांक 25 अप्रैल, 2012 को प्रत्यर्थीगण को श्री साइमन कीशिंग, जिला परिवहन अधिकारी, थौबल, मणिपुर से पत्र संख्या 3/11/डीएल/डीटीओ/टीबीएल प्राप्त हुआ है। इस पत्र में प्रत्यर्थी सं. 4 ने इस तथ्य को दोहराया है कि याचिकाकर्ता को ड्राइविंग लाइसेंस सं. 83920/एमटीएच जारी किया गया था। पत्र में यह भी कहा गया है कि श्री एस.एन. मंडल को ड्राइविंग लाइसेंस सं. 83902/एमटीएच जारी किया गया था। इस पत्र को लिखने वाले ने दिनांक 28 फरवरी, 2011 को दिए गए पत्र में दी गई गलत जानकारी हेतु डीआईजीपी से क्षमा मांगी है। दी गई गलत जानकारी के लिए खेद व्यक्त किया गया है। उल्लेखनीय है कि श्री कीशिंग ने ऊपर बताए गए ड्राइविंग लाइसेंस की दो फोटोकॉपी संलग्न की हैं।

19. उपरोक्त विवरण से पता चलता है कि कारण बताओ नोटिस एवं दिनांक 2 जून, 2011 तथा दिनांक 18 अगस्त, 2011 की समाप्ति के आक्षेपित आदेश केवल गलत संसूचना के कारण हुए, जो प्रत्यर्थी सं. 3 को

प्रत्यर्थी सं. 4 से प्राप्त हुए थे। प्रत्यर्थी सं. 3 ने सत्यापन एवं पुनः सत्यापन करवाया है तथा उसके आधार पर सही जानकारी प्राप्त की है।

20. यह एक स्वीकार्य स्थिति है कि याचिकाकर्ता को कारण बताओ नोटिस जारी करने एवं उसकी सेवाएं समाप्त करने का एकमात्र कारण यह तथ्य था कि ड्राइविंग लाइसेंस सं. 83920/एमटीएच को संबंधित प्राधिकारी द्वारा सत्यापित नहीं किया गया था कि याचिकाकर्ता को वैध रूप से जारी किया गया था। यह स्थिति तथ्यात्मक रूप से गलत थी और याचिकाकर्ता के खिलाफ दिनांक 2 जून, 2011 का आदेश तथा दिनांक 18 अगस्त, 2011 का संशोधन आदेश, अतः, संधार्य नहीं है।

21. उपरोक्त को ध्यान में रखते हुए, हम निम्नलिखित निर्देश देते हैं:-

(i) दिनांक 2 जून, 2011 एवं दिनांक 18 अगस्त, 2011 के आदेशों को अपास्त एवं अभिखंडित किया जाता है।

(ii) परिणामस्वरूप, याचिकाकर्ता को सेवा में बहाल किया जाएगा। इस संबंध में उचित आदेश चार सप्ताह के भीतर पारित किए जाएंगे तथा उसके तुरंत बाद याचिकाकर्ता को सूचित किया जाएगा।

(iii) यह भी निर्देश दिया गया है कि याचिकाकर्ता आनुमानिक वरिष्ठता के लाभों का हकदार होगा। उसकी पेंशन की गणना सहित सभी उद्देश्यों के लिए

याचिकाकर्ता को सेवा में जारी माना जाएगा जैसे कि दिनांक 2 जून, 2011 के आदेश में हस्तक्षेप नहीं किया गया है। हालांकि, याचिकाकर्ता पिछले वेतन का हकदार नहीं होगा। प्रत्यर्थी चार सप्ताह के भीतर इन निर्देशों के अनुसार आदेश पारित करेंगे तथा याचिकाकर्ता को भी इसकी जानकारी देंगे।

(गीता मित्तल)
न्यायाधीश

(दीपा शर्मा)
न्यायाधीश

अक्टूबर 1, 2013 एए

(Translation has been done through AI Tool: SUVAS)

अस्वीकरण : देशी भाषा में निर्णय का अनुवाद मुकद्दमेबाज़ के सीमित प्रयोग हेतु किया गया है ताकि वो अपनी भाषा में इसे समझ सकें एवं यह किसी अन्य प्रयोजन हेतु प्रयोग नहीं किया जाएगा। समस्त कार्यालयी एवं व्यावहारिक प्रयोजनों हेतु निर्णय का अंग्रेज़ी स्वरूप ही अभिप्रमाणित माना जाएगा और कार्यान्वयन तथा लागू किए जाने हेतु उसे ही वरीयता दी जाएगी।